eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

राग प्रस्तुति में अवसर के अनुकूल बंदिश चयन का महत्व

[1]शिवा राठौर

[2]डा0 शशि शुक्ला

[1]शोध छात्रा–संगीत, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

[2]विभागाध्यक्षा–संगीत विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

वर्तमान समय में राग ही शास्त्रीय संगीत को प्रदर्शित करने का माध्यम है। यह भावों को तथा संगीत कला को प्रदर्शित करने का ऐसा माध्यम है, जिसमें भाषा, भाव, स्वर, लय, कल्पना तथा कलाकार की कुशलता, इन सभी का सुचारू रूप से सामंजस्य दृष्टिगत होता है। यही सामंजस्य जब एक बंदिश में आता है तब एक आदर्श बंदिश का निर्माण होता है।

शब्द संक्षेप– शास्त्रीय संगीत, राग प्रस्तुति, अवसर अनुकूल बंदिश, चयन एवं महत्व।

Introduction

एक आदर्श बंदिश राग को प्रभावपूर्ण बनाने में सहायक होती है। पुराने कलाकारों के लिये उनका बंदिश संग्रह किसी ख़जाने से कम नहीं होता था। इसका एक कारण यह है कि एक कलाकार जितनी अधिक बंदिशें जानता है वह उस राग में उतने ही अधिक प्रकारों से बढ़त कर सकता है।[1] इसके अतिरिक्त श्रोता की पसन्द व बौद्धिक स्तर के अनुसार भी बंदिश का चयन करके उसकी प्रस्तुति देनी चाहिये। जैसे यदि किसी समारोह में श्रोतागण स्वयं संगीत, साहित्यादि के विद्वान हों तब ऐसी बन्दिश का चुनाव करना चाहिये जो कलात्मक, साहित्यिक, तथा भाव आदि के आधार पर उच्च कोटि की हो उदाहरण स्वरूप –

स्थाई – अलबेलो अवध कुमार
नवल जलद तन कच घुँघरार
अन्तरा – वृषभस्कंध बल भुज विशाल दल,
दनुज नतस लख सिंह चाल
सुर भय करन भूभार हरन हरि
लीनेउ मनुजावतार प्रणवाधार।2

राग भीमपलासी (तीनताल, मध्यलय) में निबद्ध प्रस्तुत बंदिश में ओंकार नाथ ठाकुर जी ने भगवान श्री राम के सुन्दर रूप तथा दानवों के संघार हेतु मानव के रूप में अवतार लिये जाने का वर्णन उच्चकोटि के शब्द तथा साहित्य का प्रयोग करते हुये किया है। कदाचित् ऐसे साहित्य का आनन्द विद्ववजन ही उठा सकते हैं। ऐसी सभाओं में एक कलाकार इस प्रकार की कलात्मक बंदिश प्रस्तुत

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

करके भी प्रशंसा पा सकता है, उदाहरण स्वरूप पं0 रामाश्रय झा की यह बन्दिश जो कि राग बिलासखानी तोड़ी में रचित तथा तीन ताल (मध्यलय) में निबद्ध है –

स्थाई – जगदम्बिका अम्बिका
मर्दनी अम्ब शुम्भ निशुम्भ
गले मुण्ड मालिका
अन्तरा– दुर्गे भवानी दानी दयानी
सुर नर कीन्हें अभय 'रामरंग'
तेरो ही नाम कालिका।3

इस प्रकार की बन्दिशें श्रोताओं की चमत्कृत कर देती है और वह आनन्दित हो उठते हैं। किन्तु यदि सामने ऐसे श्रोता हैं, जिनमें से अधिकांश श्रोताओं को शास्त्रीय संगीत के विषय में अधिक जानकारी ही न हो तब सरल साहित्य, वाक्य विन्यास तथा स्वर विन्यास वाली बंदिशों को चुनाव करना उचित रहेगा, जैसे–

श्री विष्णु कुमार कपूर द्वारा राग हमीर में रचित, तीनताल (मध्यलय) में निबद्ध यह बन्दिश –

स्थाई – आये आये आये अवध में
अवधपति राजाराम
अन्तरा – दीप जले घर–घर में सजनी
दिवस भई वह अमासी रजनी
नवल यौवना आज अयोध्या
फूली नहीं समाई

प्रस्तुत बंदिश में कपूर जी ने बहुत ही सुन्दर और सरल ढंग से श्रीराम के अयोध्या वापस आने पर नगर वासियों द्वारा खुशियाँ मनाये जाने का वर्णन किया है। इस बन्दिश का स्वर विन्यास सरल तथा साहित्य आसानी से समझ में आने वाला है।

प्रस्तुत बंदिश में 'झा' जी ने होली से सम्बन्धित साहित्य का चुनाव किया है। इस बंदिश का स्वर विन्यास सरल तथा साहित्य आसानी से समझ में आने वाला है।

एक अन्य उदाहरण –

स्थाई – जागूँ मैं सारी रैना बलमा
रसिया मन लागे न मोरा
अन्तरा – बहुत रमायो सौतन घरवा
पिया गरवा लगायो।5

यह बन्दिश प्रभा अत्रे जी द्वारा निर्मित है जो राग मारूबिहाग में रचित, तीन ताल (मध्यलय) में निबद्ध है। इस बन्दिश का साहित्य सरल, सुन्दर व बुद्धिग्राह्य है। इस प्रकार यह जन साधारण के लिये चुनी जाने वाली उपयुक्त बन्दिशें हैं। इसी प्रकार कोई शिक्षक यदि कुछ बड़े आयुवर्ग के बच्चों को संगीत सिखा रहा है तब उनकी क्षमता के अनुसार कोई भी बंदिश उन्हें सिखाई जा सकती है किन्तु

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

यदि ऐसे बच्चों को संगीत सिखाया जा रहा जो अभी अपना प्रारम्भिक ज्ञान ही ले रहे हैं तब उनके लिये सरल शब्द तथा स्वर संयोजन वाली बन्दिशें उपयुक्त रहेंगी। प्रारम्भिक स्तर के बच्चों के लिये कुछ सरल तथा स्वरचित बंदिशें इस प्रकार हैं –

राग–दुर्गा

शास्त्रीय परिचय–

थाट – बिलावल
जाति – औडव–औडव
वादी स्वर – म
संवादी स्वर – सा
गायन समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर
वर्जित स्वर – ग, नि
आरोह – सा रे म प ध सं।
अवरोह – सं ध प ध म रे सा, ध़ सा।
पकड़ – म प ध म रे प, ध म रे, ध़ ध़ सा।

छोटा ख्याल

स्थाई – आसमान में कितने सारे
टिमटिम टिमटिम करते तारे
अन्तरा – सूरज दादा जब आते हैं
छू मंतर हो जाते सारे

स्वर लिपि

स्थाई – ताल– तीन ताल (मध्यलय)

सा रे म प
आ ऽ स मा
म प ध सं
टि म टि म
ग ध म प ध
ऽ न में ऽ
ध सं रें सं
टि म टि म
2 म म रे सा
कि त ने ऽ
रें सं ध प
क र ते ऽ
0
ध़ रे सा सा

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

सा ऽ रे ऽ
म म रे सा
ता ऽ रे ऽ
3

अन्तरा –

म	म	प	ध	प	ध	सं	–	ध	सं	रें	रें	मं	रें	सं	ध
सू	ऽ	र	ज	दा	ऽ	दा	ऽ	ज	ब	आ	ऽ	ते	ऽ	हैं	ऽ
ध	सं	रें	मं	रें	रें	सं	–	ध	सं	ध	प	म	म	रे	सा
छू	ऽ	मं	ऽ	त	र	हो	ऽ	जा	ऽ	ते	ऽ	सा	ऽ	रे	ऽ

ग 2
0
3

राग–देस

शास्त्रीय परिचय –

थाट – खमाज
जाति – औडव–सम्पूर्ण
वादी स्वर – रे
सम्वादी स्वर – प
गायन समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर
वर्जित स्वर – आरोह में ग – ध
स्वर – दोनों निषाद प्रयुक्त, शुद्ध नि आरोहात्मक तथा कोमल नि अवरोहात्मक
आरोह – नि़ सा रे म प नि सं।
अवरोह – सं नि ध प म ग रे ग नि़ सा।
पकड़ – रे म प नि ध प, प ध प म, ग रे ग सा।

छोटा ख्याल

स्थाई – सावन आया सावन आया
साथ में अपने वर्षा लाया
अन्तरा – धरतीं पर नव कलियाँ महकी
मौसम हरियाली का आया

स्वरलिपि

स्थाई – ताल– तीनताल (मध्यलय)

प नी सं रें नी धप म ग
रे म ग रे म गरे नी़ सा

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

सा ऽ व न आ ऽऽ या ऽ सा ऽ व न आ ऽऽ या ऽ
म रे म प म प नी नी प नी सं नी सं नी ध प
सा ऽ थ में अ प ने ऽ व ऽ र्षा ऽ ला ऽ या ऽ
3 ग 2
0

अन्तरा –
म प नी ध म प नी सं नी नी सं रे मं गंरें नी सा

ध र ती ऽ प र न ई क लि याँ ऽ म हऽ कीं ऽ

नी सं नी सं नी नी ध प रे म ग रे म गरे ऩी सा

मौ ऽ स म ह रि या ऽ ली ऽ का ऽ आ ऽऽ या ऽ
3 ग 2
0

राग–भूपाली
शास्त्रीय परिचय–
थाट – कल्याण
जाति – औडव–औडव
वादी स्वर – ग
सम्वादी स्वर – ध
गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
वर्जित स्वर – म–नि
आरोह – सा रे ग प ध सं।
अवरोह – सं ध प ग रे सा।
पकड़ – सा ध़ सा रे ग प ग ध प ग, रे सएा।
छोटा ख्याल
स्थाई – आजा निंदिया काहे न आवे
मात यशोदा कान्ह सुआवे
अन्तरा – सुन्दर अखियाँ स्वन सलोने
सुन्दर स्मित आवे–जावे
स्वरलिपि
स्थाई – ताल – तीनताल (मध्यलय)

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

सा रे ग रे सा ध़ सा रे ग – – रे ग – प –
आ ऽ जा ऽ निं दि या ऽ का ऽ हे न
आ ऽ वे ऽ
ग रे ग प ग प ध प पध सं ध प
ग रे सा सा
मा ऽ त य शो ऽ दा ऽ काऽ ऽ न्ह सु आ ऽ वे ऽ
0 3 ग
2

अन्तरा–
ग ग प प ध ध सं ध सं – – –
ध रें सं सं
सुं ऽ द र अ खि याँ ऽ स्व ऽ प्न स लो ऽ ने ऽ
सं रे गं रें सं ध सं सं सं सं ध प ग रे सा सा
सुं ऽ द र स्- ऽ मि त आ ऽ वे ऽ जा ऽ वे ऽ
0 3 ग
2

राग–खमाज

शास्त्रीय परिचय–

थाट – खमाज
जाति – षाडव–सम्पूर्ण
वाादी स्वर – ग
सम्वादी स्वर – नि
गायन समय – रात्रि का द्वितीय प्रहर
वर्जित स्वर – आरोह में रे
स्वर – आरोह में शुद्ध नि व अवरोह में कोमल नि प्रयुक्त शेष स्वर शुद्ध
आरोह – सा ग म प ध नी सं ।
अवरोह – सं नि ध प म ग रे सा।
पकड़ – नि ध म प, ध म ग

छोटा ख्याल

स्थाई – कान्हा की वंशी सुन राधा
मन्द मन्द मुस्काती है।
अन्तरा – मधुर–मधुर तानों में खोकर
सुध–बुध खोती जाती है।

स्वरलिपि

स्थाई – ताल–तीनताल (मध्यलय)

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

नी सं नी सं नि नि ध प ग म प म ग रेसा नी़ सा
का ऽ न्हा ऽ की ऽ बं ऽ सी ऽ सु न रा ऽऽ धा ऽ

ग म ग म प ध प म ग म प ध ग म ग –
मं ऽ द मं ऽ द मु स का ऽ ती ऽ है ऽ ऽ ऽ
0 3 ग
2

अन्तरा–
ग म प नी ध प म ग ग म प ध नी नी सं –
म धु र म धु र ता ऽ नो ऽ में ऽ खो ऽ क र
सं गं रें सं नि नि ध प ग म प ध ग म ग –
सु ध बु ध खो ऽ ती ऽ जा ऽ ती ऽ है ऽ ऽ ऽ
3 0 ग
2

राग–काफी
शास्त्रीय परिचय–
थाट – काफी
जाति – सम्पूर्ण–सम्पूर्ण
वादी स्वर – प
सम्वादी स्वर – रे
गायन समय – मध्यरात्रि
वर्जित स्वर – कोई नहीं
स्वर – ग–नि स्वर कोमल, शेष शुद्ध
आरोह – सा रे ग म ध नि सं ।
अवरोह – सं नि ध प म ग रे सा।
पकड़ – सा सा, रे रे, ग ग, म म, प,
छोटा ख्याल
स्थाई– प्रभु हम बच्चे हैं नादान
हमें दीजिये ये वरदान
अन्तरा– मिलजुल कर सब रहें प्रेम से
सबको समझें एक समान

स्वरलिपि
ताल – तीनताल (मध्यलय)

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

स्थाई–

सा सा रे रे ग ग म म प – – म
ग रे सा –
प्र भु ह म ब ऽ च्चे ऽ हैं ऽ ना ऽ
दा ऽ ऽ न
सं सं नि ध नि नि ध प प ध पम गरे सारे गम प –
ह में ऽ दी ऽ जि ये ऽ ये ऽ वर ऽऽ ऽदा ऽऽ ऽ न
ट 3 ग 2

अन्तरा–

म प ध नि सं – नि सं ध नि सं रें गं गं रें सं
मि ल जु ल क र ह म र हें ऽ प्रे ऽ म से ऽ

सं नि ध प म प म ग रे ग रे सा सारे गम प –
स ब को ऽ स म झें ऽ ए ऽ क स माऽ ऽऽ ऽ न
ट 3 ग 2

इस प्रकार इन बंदिशों का साहित्य तथा स्वर विन्यास सरल होने के कारण यह बंदिशें प्रारंभिक स्तर के संगीत विद्यार्थियों के संगीत सीखने में सहायक हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. पाठक, सुनन्दा, 1989, हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
2. ठाकुर, पं0 ओंकारनाथ, 2012, संगीतांजलि, पिलग्रिम्स पब्लिशिंग
3. झा, पं0 रामाश्रय, 2020, अभिनव गीतांजलि, संगीत सदन प्रकाशन
4. कपूर, श्री विष्णु कुमार, संगीतोद्यान,
5. अत्रे, प्रभा, 2016, स्वरागिनी स्वरंजनी, बी0आर0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन
6. www.google.com